

NCERT SOLUTIONS

CLASS - 12th



aglasem.com

Class : 12th

Subject : Psychology

Chapter : 2

Chapter Name : आत्मा एवं व्यक्तित्व

Q1 आत्मा क्या है? आत्मा की भारतीय अवधारणा पाश्चात्य अवधारणा से किस प्रकार भिन्न है?

Answer. भारतीय सांस्कृतिक संदर्भ में आत्म का विश्लेषण अनेक महत्वपूर्ण पक्षों को स्पष्ट करता है जो पाश्चात्य सांस्कृतिक संदर्भ में पाए जाने वाले पक्षों से भिन्न होते हैं। भारतीय और पाश्चात्य अवधारणाओं के मध्य एक महत्वपूर्ण अंतर इस तथ्य को लेकर है की आत्म और दूसरे अन्य के बीच किस प्रकार से सीमा रेखा निर्धारित की गई है। पाश्चात्य अवधारणा में यह सीमा रेखा अपेक्षाकृत स्थिर और दृढ़ प्रतीत होती है। दूसरी तरफ, भारतीय अवधारणा में आत्म और अन्य के मध्य सीमा रेखा स्थिर ना होकर परिवर्तनीय प्रकृति की बताई गई है। इस प्रकार एक क्षण में व्यक्ति का आत्म अन्य सब कुछ को अपने में अंतर्निहित करता हुआ ब्रह्मांड में विलीन होता हुआ प्रतीत होता है। किंतु दूसरे क्षण में आत्म अन्य सबसे पूर्णतया विनिवर्तित होकर व्यक्तिगत हाथ में (उदाहरणार्थ, हमारी व्यक्तिगत आवश्यकताएं एवं लक्ष्य) पर केंद्रित होता हुआ प्रतीत होता है। पाश्चात्य अवधारणा आत्म और अन्य मनुष्य और प्रकृति तथा आत्मनिष्ठा और वस्तुनिष्ठ के मध्य स्पष्ट द्विभाजन करती हुई प्रतीत होती है।

पाश्चात्य संस्कृति में आत्म और समूह को स्पष्ट रूप से परिभाषित सीमा रेखाओं के साथ दो भिन्न इकाइयों के रूप में स्वीकार किया गया है। व्यक्ति समूह का सदस्य होते हुए भी अपनी व्यक्ति का बनाए रखता है। भारतीय संस्कृति में आत्म को व्यक्ति के अपने समूह से पृथक नहीं किया जा सकता है, बल्कि दोनों सामंजस्य पूर्ण सहअस्तित्व के साथ बने रहते हैं। दूसरी तरफ पाश्चात्य संस्कृति में दोनों के बीच एक दूरी बनी रहती है। यही कारण है कि अनेक पाश्चात्य संस्कृतियों का प्रतिवादी और अनेक एशियाई संस्कृतियों का सामूहिकतावादी संस्कृति के रूप में विशेषीकरण किया जाता है।

Page : 28 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q2 परितोषण के विलंब से क्या तात्पर्य है? इसे क्यों वयस्कों के विकास लिए महत्वपूर्ण समझा जाता है?

Answer. हम प्रायः अपनी कुछ आवश्यकताओं की संतुष्टि को विलंबित अथवा आस्थगित कर देते हैं। आवश्यकताओं के परितोषण को विलंबित अथवा आस्थगित करने के व्यवहार को सीखना ही आत्म नियंत्रण कहा जाता है। दूरगामी लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आप नियंत्रण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारतीय सांस्कृतिक परंपराएं हमें कुछ ऐसे ही प्रभावी उपाय प्रदान कराती है, जिनसे आत्म नियंत्रण का विकास होता है (उदाहरणार्थ, व्रत अथवा रोजा में उपवास करना और सांसारिक वस्तुओं के प्रति अनासक्ति का भाव रखना)। आत्म नियंत्रण के लिए अनेक मनोवैज्ञानिक तकनीक सुझाए गई है। अपने व्यवहार का प्रेक्षण एक तकनीक है जिसके द्वारा आत्म के विभिन्न पक्षों को परिवर्तित, परिमार्जित अथवा सशक्त करने के लिए आवश्यक सूचनाएं प्राप्त होती हैं। आत्म अनुदेश एक अन्य महत्वपूर्ण तकनीक है। हम पराया अपने आप को कुछ करने तथा मनोवांछित तरीके से व्यापार करने के लिए अनुदेश देते हैं। ऐसे अनुदेश आत्म नियमन में प्रभावी होते हैं। आत्म प्रबलन एक तीसरी तकनीक है इसके अंतर्गत ऐसे व्यवहार प्रस्तुत होते हैं जिनके परिणाम सुखद होते हैं। उदाहरणार्थ, यदि आपने अपनी परीक्षा में अच्छा निष्पादन किया है तो आप अपने मित्रों के साथ फिल्म देखने जा सकते हैं। यह तकनीकें लोगों द्वारा उपयोग में लाई जाती हैं और आत्म नियमन तथा आत्म नियंत्रण के संदर्भ में अत्यंत प्रभावी पाई गई हैं।

Page : 28 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q3 व्यक्तित्व को आप किस प्रकार परिभाषित करते हैं? व्यक्तित्व के अध्ययन के प्रमुख उपागम कौन से हैं?

Answer. व्यक्तित्व शब्द प्रायः हमारी दैनंदिनी चर्चा अथवा बातचीत में प्रकट होता है। व्यक्तित्व का शाब्दिक अर्थ लैटिन शब्द परसोना से लिया गया है। परसोना उस मुखोटे को कहते हैं जिसे अपनी मुख रूपसज्जा को बदलने के लिए रोमन नाटकों में अभिनेता उपयोग में लाते थे। एक सामान्य जन के लिए व्यक्तित्व का तात्पर्य सामान्यतया व्यक्ति के शारीरिक एवं बाह्य रूप से होता है। मनोवैज्ञानिक शब्दों में व्यक्तित्व से तात्पर्य उन विशिष्ट तरीकों से है जिनके द्वारा व्यक्तियों और स्थितियों की प्रति अनुक्रिया की जाती है। शब्द व्यक्तित्व इस अर्थ में अनन्य एवं सापेक्ष रूप से स्थिर गुणों से है जो एक समयावधि में विभिन्न स्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार को विशिष्टता प्रदान करते हैं।

व्यक्तियों के व्यवहारों में पाई जाने वाली भिन्नता तथा संगति को समझने के लिए और उसकी व्याख्या करने के लिए अनेक उपागम एवं सिद्धांत विकसित किए गए हैं। यह सिद्धांत मानव व्यवहार के विभिन्न मॉडलों पर आधारित है। प्रत्येक सिद्धांत व्यक्तित्व के कुछ पक्षों पर ही प्रकाश डालता है, सभी पक्षों पर नहीं। मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के प्ररूप और विशेषक (शीलगुण) उपागम के मध्य विभेद किया है:

प्ररूप उपागम (type approach) व्यक्ति के प्रेक्षित व्यवहार परक विशेषताओं के कुछ व्यापक स्वरूपों का परीक्षण कर मानव व्यक्तित्व को समझने का प्रयास करता है।

इसके विपरीत विशेषक उपागम (trait approach) विशिष्ट मनोवैज्ञानिक गुणों पर बल देता है जिसके आधार पर व्यक्ति और स्थिर रूपों में भिन्न होते हैं।

अंतः क्रियात्मक उपागम (interactional approach) के अनुसार स्थितिपरक विशेषताएं हमारे व्यवहारों को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

Page : 28 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q4 व्यक्तित्व का विशेषक उपागम क्या है? यह कैसे प्ररूप उपागम से भिन्न है?

Answer. प्ररूप उपागम व्यक्ति के प्रेक्षित व्यवहारपरक विशेषताओं कि कुछ व्यापक स्वरूपों का परीक्षण कर मानव व्यक्तित्व को समझने का प्रयास करता है प्रत्येक व्यवहार पर एक स्वरूप व्यक्तित्व के किसी एक प्रकार को इंगित करता है जिसके अंतर्गत उस स्वरूप की व्यवहारपरक विशेषता की समानता के आधार पर व्यक्तियों को रखा जाता है। प्राचीनकाल से ही लोगों को व्यक्तित्व के प्ररूपों में वर्गीकृत करने का प्रयास किया गया है। ग्रीक चिकित्सक हिप्पोक्रेट्स ने एक व्यक्तित्व का प्ररूप विज्ञान प्रस्तावित किया जो फ्लूड और ह्यूमर पर आधारित है। उन्होंने लोगों को चार प्ररूपों में वर्गीकृत किया है(जैसे- उत्साही, श्लैष्मिक, विवादी तथा कोपशील)। भारत में भी एक प्रसिद्ध आयुर्वेदिक ग्रंथ चरक संहिता ने लोगों को वात, पित्त, एवं कफ तीन वर्गों में तीन ह्यूमरल तत्वों, जिन्हें त्रिदोष कहते हैं, के आधार पर वर्गीकृत किया है।

जबकि विशेषक उपागम मुख्यतः व्यक्तित्व के आधारभूत घटकों के वर्णन अथवा विशेषीकरण से संबंधित होता है। यह सिद्धांत व्यक्तित्व का निर्माण करने वाले मूल तत्व की खोज करता है। मनुष्य व्यापक रूप से मनोवैज्ञानिक गुणों में भिन्नताओं का प्रदर्शन करते हैं, फिर भी उनको व्यक्तित्व विश्लेषकों के लघु समूह में सम्मिलित किया जा सकता है। विशेषक उपागम हमारे दैनिक जीवन के सामान्य अनुभव के बहुत नजदीक है। उदाहरण के लिए, जब हम यह जान लेते हैं कि कोई व्यक्ति सामाजिक है तब हम यह मान लेते हैं कि वह व्यक्ति ना केवल सहयोग, मित्रता और सहायता करने वाला होगा बल्कि सामाजिक घटकों से युक्त व्यवहार प्रदर्शित करने में भी प्रवृत्त होगा।

अर्थात् कह सकते हैं विशेषक उपागम विशिष्ट मनोवैज्ञानिक गुणों पर बल देता है जिसके आधार पर व्यक्ति संगत और स्थिर रूपों में भिन्न होते हैं।

Page : 28 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q5 फ्रायड ने व्यक्तित्व की संरचना की व्याख्या कैसे की है?

Answer. फ्राइड के अनुसार व्यक्तित्व के प्राथमिक संरचनात्मक तत्व तीन हैं- इदम् या इड(id), अहं(ego), पराहम(superego)। यह तत्व अचेतन में ऊर्जा के रूप में होते हैं और इनके बारे में लोगों द्वारा किए गए व्यवहार के तरीकों से अनुमान लगाया जा सकता है।

इड- यह व्यक्ति की मूलप्रवृत्तिक ऊर्जा का स्रोत होता है। इसका संबंध व्यक्ति की आदिम आवश्यकताओं, कामइच्छाओं और आक्रमक आवेगों की तात्कालिक तुष्टि से होता है। यह सुखेप्सा-सिद्धांत(pleasure principle) पर कार्य करता है जिसका यह अभिग्रह होता है सुख की तलाश करते हैं और कष्ट का परिहार करते हैं। फ्राइड के अनुसार मनुष्य की अधिकांश मूलप्रवृत्तिक ऊर्जा कामुक होती है, और शेष ऊर्जा आक्रमक होती है। इड को नैतिक मूल्यों, समाज और दूसरे लोगों की कोई परवाह नहीं होती है।

अहं- इसका विकास इड से होता है और यह व्यक्ति की मूलप्रवृत्तिक आवश्यकताओं की संतुष्टि वास्तविकता के धरातल पर करता है। व्यक्तित्व की यह संरचना वास्तविकता सिद्धांत(reality principle) से संचालित होती है और प्रायः इड को व्यवहार करने के उपयुक्त तरीकों की तरफ निर्दिष्ट करता है।

पराहम- पराहम को समझने का और इसकी विशेषता बताने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि इसको मानसिक प्रकार्यों की नैतिक शाखा के रूप में जाना जाए। पराहम, इड और अहं को बताता है कि विशिष्ट अवसर पर इच्छा विशेष की संतुष्टि नैतिक है अथवा नहीं।

इस प्रकार व्यक्ति के प्रकार्यों के रूप में फ्राइड का विचार था कि मनुष्य का अचेतन तीन प्रतिस्पर्धी शक्तियाँ अथवा ऊर्जाओं से निर्मित हुआ है। कुछ लोगों में इड, पराहम से अधिक प्रबल होता है तो कुछ अन्य लोगों में पराहम इड से अधिक प्रबल होता है। इड, पराहम और अहं की सापेक्ष शक्ति प्रत्येक व्यक्ति की स्थिरता का निर्धारण करती है।

Page : 28 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q6 हार्नि की अवसाद की व्याख्या अलफ्रेड एडलर की व्याख्या से किस प्रकार भिन्न है?

Answer. एडलर के सिद्धांत को व्यष्टि या व्यक्तिक मनोविज्ञान के रूप में जाना जाता है। उनका आधारभूत अभी ग्रह यह है कि व्यक्ति का व्यवहार उद्देश्य पूर्ण होता है। हम में से प्रत्येक में चयन करने एवं सर्जन करने की क्षमता होती है। हमारे व्यक्तिगत लक्ष्य ही हमारी अभिप्रेरणा के स्रोत होते हैं। जो लक्ष्य हमें सुरक्षा प्रदान करते हैं और हमारी और पर्याप्तता की भावना पर विजय प्राप्त करने में हमारी सहायता करते हैं, वह हमारे व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एडलर के विचार से प्रत्येक व्यक्ति अपर्याप्तता और अपराध की भावनाओं से ग्रसित होता है। इसे हम हीनता मनोग्रंथि (inferiority complex) के नाम से जानते हैं। जो बाल्यावस्था में उत्पन्न होती है। इस मनोवृत्ति पर विजय प्राप्त करना इष्टतम व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक है।

वही कैरेन हार्नि जो कि फ्रायड की एक अन्य अनुयायी थी, जिन्होंने फ्राइड के आधारभूत सिद्धांतों से भिन्न एक सिद्धांत विकसित किया। उन्होंने मानव समृद्धि और आत्मसिद्धि पर बल देते हुए मानव जीवन के एक

आशावादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया। उन्होंने यह तर्क प्रस्तुत किया कि मनोवैज्ञानिक विकार बाल्यावस्था की अवधि में विक्षुब्ध अन्तर्व्यक्तिक संबंधों (disturbed interpersonal relationship) के कारण उत्पन्न होते हैं। यदि माता-पिता का अपने बच्चों के प्रति व्यवहार उदासीन, हतोत्साहित करने वाला और अनियमित होता है तो बच्चा असुरक्षित महसूस करता है जिसके परिणाम स्वरूप एक ऐसी भावना जिसे मूल दुश्चिन्ता (basic anxiety) कहते हैं, उत्पन्न होती है। इस दुश्चिन्ता के कारण माता-पिता के प्रति बच्चे में एक गहन अमर्ष और मूल आक्रामकता घटित होती है। अत्यधिक प्रभुत्व अथवा उदासीनता का प्रदर्शन कर एवं अत्यधिक अथवा अत्यंत कम अनुमोदन प्रदान कर माता-पिता बच्चों में एकाकीपन और सहायता की भावनाएं उत्पन्न करते हैं जो उनके स्वस्थ विकास में बाधक होती हैं।

Page : 28 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q7 व्यक्तित्व के मानवतावादी उपागम की प्रमुख प्रतिज्ञा क्या है? आत्मसिद्धि से मैस्लो का क्या तात्पर्य था?

Answer. मानवतावादी सिद्धांत मुख्यतः फ्रायड के सिद्धांत के प्रत्युत्तर में विकसित हुए। व्यक्तित्व के संदर्भ में मानवतावादी परिपेक्ष के विकास में कार्ल रोजर्स और अब्राहम मैस्लो ने विशेष रूप से योगदान किया है। रोजर्स द्वारा प्रस्तावित सर्वाधिक महत्वपूर्ण विचार एक पूर्णतः प्रकायशील व्यक्ति (fully functioning person) का है। उनका विश्वास है कि व्यक्तित्व के विकास के लिए संतुष्टि अभिप्रेरक शक्ति है। लोग अपनी क्षमताओं, संभाव्यताओं और प्रतिभाओं को संभव सर्वोत्कृष्ट तरीके से अभिव्यक्त करने का प्रयास करते हैं। व्यक्तियों में एक सहज प्रवृत्ति होती है जो उन्हें अपने वंशागत प्रकृति की सिद्धि या प्राप्ति के लिए निर्दिष्ट करती है। मानव व्यवहार के बारे में रोजर्स ने दो आधारभूत अभिग्रह निर्मित किए हैं। एक यह कि व्यवहार लक्ष्योन्मुख और सार्थक होता है और दूसरा यह कि लोग (जो कि सहज रूप से अच्छे होते हैं) सदैव अनुकूल तथा आत्मसिद्धि वाले में व्यवहार का चयन करेंगे।

वही मैस्लो ने आत्मसिद्धि की लब्धि के रूप में मनोवैज्ञानिक रूप से स्वस्थ लोगों की एक विस्तृत व्याख्या दी। उन्होंने बताया आत्मसिद्धि वह अवस्था होती है जिसमें लोग अपनी संपूर्ण संभाव्यता को विकसित कर चुके होते हैं। मैस्लो ने मनुष्यों आशावादी और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया है। इसके अंतर्गत मानव में प्रेम, हर्ष और सृजनात्मक कार्यों को करने की संभाव्यता होती है। मनुष्य अपने जीवन को स्वरूप देने में और आत्म सिद्धि को प्राप्त करने में स्वतंत्र माने गए हैं। अभिप्रेरणाओं, जो हमारे जीवन को नियमित करती हैं, के विश्लेषण के द्वारा आत्मसिद्धि को संभव बनाया जा सकता है। हम जानते हैं कि जैविक, सुरक्षा और आत्मीयता की आवश्यकता पशु और मनुष्य दोनों में पाई जाती हैं। अतएव किसी व्यक्ति का मात्र इन आवश्यकताओं की संतुष्टि में संलग्न होना उसे पशुओं के स्तर पर ले आता है। मानव जीवन की वास्तविक यात्रा आत्मसम्मान और आत्मसिद्धि जैसी आवश्यकताओं के अनुसरण से आरंभ होती है। मानवतावादी उपागम जीवन के सकारात्मक पक्षों के महत्व पर बल देता है।

Page : 28 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q8 व्यक्तित्व मूल्यांकन में प्रयुक्त की जाने वाली प्रमुख प्रेक्षण विधियों का विवेचन करें। विधियों के उपयोग से हमें किस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है?

Answer. लोगों को जानने, समझने और उनका वर्णन करने का कार्य ऐसा है जिससे दैनंदिनी जीवन में प्रत्येक व्यक्ति संबंध होता है हम अपने व्यक्तिगत जीवन में अपने पूर्व अनुभवों, प्रेक्षणों, वार्तालापों और दूसरे लोगों से प्राप्त सूचनाओं पर विश्वास करते हैं। इस उपागम के आधार पर दूसरों को समझना अनेक कारकों से प्रभावित हो सकता है जो हमारे निर्णयों को अतिरंजित कर वस्तुनिष्ठता को कम कर सकते हैं। इसलिए व्यक्तित्वों का विश्लेषण करने के लिए हमें अपने प्रयासों को अधिक औपचारिक रूप से संगठित करने की आवश्यकता होती है।

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व की समझ के लिए सोउद्देश्य औपचारिक प्रयास को व्यक्तित्व मूल्यांकन कहा जाता है।

मूल्यांकन का तात्पर्य उन प्रक्रियाओं से है जिनका उपयोग कुछ विशेषताओं के आधार पर लोगों के मूल्यांकन या उनके मध्य विभेदन के लिए किया जाता है। मूल्यांकन का लक्ष्य लोगों के व्यवहारों को न्यूनतम त्रुटि और अधिकतम परिशुद्धता के साथ समझना और उनकी भविष्यवाणी करना होता है। मूल्यांकन में किसी स्थिति विशेष में व्यक्ति सामान्यतया कौन सा व्यवहार करता है और कैसे करता है हम यह समझने का प्रयास करते हैं। हमारी समझ को उन्नत करने के अतिरिक्त, मूल्यांकन निदान, प्रशिक्षण, स्थानन, परामर्श और अन्य उद्देश्यों के लिए भी बहुत उपयोगी है।

मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न तरीकों से व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने का प्रयास किया है। सामान्यता सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली तकनीकों के अंतर्गत मनोमितिक परीक्षण(psychometric tests), आत्म प्रतिवेदन माप(self report measures), प्रक्षेपी तकनीकें(projective techniques), और व्यवहारपरक विश्लेषण(behavioural analysis) आते हैं।

इन तकनीकों के मूल विभिन्न सैद्धांतिक उन्मुखताओं में है इसलिए यह तकनीक व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालती है।

Page : 28 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q9 संरचित व्यक्तित्व परीक्षणों से क्या तात्पर्य है? व्यापक रूप से उपयोग किए गए दो संरचित व्यक्तित्व परीक्षण कौन से हैं?

Answer. प्रक्षेपी तकनीकों का विकास अचेतन अभिप्रेरणाओं और भावनाओं का मूल्यांकन करने के लिए किया गया है। यह तकनीकें अभिग्रह पर आधारित हैं की कम संरचित अथवा असंरचित उद्दीपक अथवा व्यक्तियों को उस स्थिति पर अपनी भावनाओं, इच्छाओं और आवश्यकताओं को प्रक्षेपण करने का अवसर प्रदान करता है। विशेषज्ञों द्वारा इन प्रक्षेपणों की व्याख्या की जाती है। विभिन्न प्रकार की प्रक्षेपी तकनीकी विकसित की गई हैं। जिनमें व्यक्तित्व के मूल्यांकन के लिए विभिन्न प्रकार की उद्दीपक सामग्रियों और स्थितियों का उपयोग किया जाता है। इनमें से कुछ तकनीकों में उद्दीपकों के साथ प्रयोज्य को अपने साथियों को बताने की आवश्यकता होती है, चित्रों को देखकर कहानी लिखनी होती है, कुछ में आरेखों द्वारा अभिव्यक्ति अपेक्षित होती है और कुछ में उद्दीपकों के एक बृहत समुच्चय में से उद्दीपकों का वरण करने के लिए कहा जाता है। व्यापक रूप से उपयोग किए जाने वाले दो संरचित व्यक्तित्व परीक्षण हैं:

1. रोर्शा मसिलक्ष्म परीक्षण
2. कथानक संप्रत्यक्षण परीक्षण

Page : 28 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q10 व्याख्या कीजिए की प्रक्षेपी तकनीक किस प्रकार व्यक्तित्व का मूल्यांकन करती है? कौन से व्यक्तित्व के प्रक्षेपी परीक्षण मनोवैज्ञानिक द्वारा व्यापक रूप से उपयोग में लाए गए हैं?

Answer. व्यक्तित्व मूल्यांकन के जिन तकनीकों का वर्णन सामान्य रूप से होता है वे सब प्रत्यक्ष तकनीकें हैं जिनमें व्यक्ति से सीधे उसके बारे में सूचनाएं प्राप्त करके उसके व्यक्तित्व के बारे में जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है, और वह व्यक्ति स्पष्ट रूप से जानता है कि उसके व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया जा रहा है। इन स्थितियों में लोग प्रायः आत्मचेतन का अनुभव करते हैं और अपनी निजी या अंतरंग भावनाओं, विचारों और अभिप्रेरणाओं को व्यक्त करने में हिचकिचाते हैं। वे जब भी ऐसा करते हैं तो प्रायः सामाजिक दृष्टि से वांछनीय तरीके के व्यवहार करने का प्रयास करते हैं। प्रक्षेपी तकनीकों का विकास अचेतन अभिप्रेरणाओं और भावनाओं का

मूल्यांकन करने के लिए किया गया है। यह तकनीकें अभिग्रह पर आधारित हैं कि कम संरचित अथवा असंरचित उद्दीपक अथवा स्थिति व्यक्तियों को उस स्थिति पर अपनी भावनाओं, इच्छाओं और आवश्यकताओं को प्रक्षेपन करने का अवसर प्रदान करता है। विशेषज्ञों द्वारा इन प्रक्षेपणों की व्याख्या की जाती है। विभिन्न प्रकार की प्रक्षेपी तकनीकें विकसित की गई हैं। जिनमें व्यक्तित्व के मूल्यांकन के लिए विभिन्न प्रकार के उद्दीपक सामग्रीयों और स्थितियों का उपयोग किया जाता है। इनमें से कुछ तकनीकों उद्दीपक के साथ प्रयोज्य को अपने साहचर्य को बताने की आवश्यकता होती है।
मसिलक्ष्म परीक्षण को मनोवैज्ञानिकों द्वारा उपयोग किया गया है। रोर्शा परीक्षण में इसका इस्तेमाल हुआ है जो व्यापक रूप से प्रसिद्ध है। यह परीक्षण हर्मन रोर्शा द्वारा विकसित किया गया था।

Page : 28 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q11 अरिहंत एक गायक बनना चाहता है, इसके बावजूद की वह एक चिकित्सकों के एक परिवार से संबंध रखता है। यद्यपि उसके परिवार के सदस्य दावा करते हैं की वे उसको प्रेम करते हैं किंतु वह उसकी जीवनवृत्ति को दृढ़ता से अस्वीकार कर देते हैं। कार्ल रॉजर्स की शब्दवली का उपयोग करते हुए अरिहंत के परिवार द्वारा प्रदर्शित अभिवृत्तियों का वर्णन कीजिए।

Answer. छात्र स्वयं करें।

Page : 28 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

aglasem.com